बाबा मोहन राम चालीसा

जै मन मोहन जग विख्याता।

दीन दुखियों के तुम हो दाता॥

तुम्हरो ध्यान सभी जन धरते।

तुम रक्षा भक्तों की करते॥

हिंदीपथ.कॉम – HindiPath.com

काली खोली वास तुम्हारा।

करे सभी जग का निस्तारा॥

ज्योति गुफा में प्यारी जलती।

दूर दूर से दुनिया आती॥

राजिस्थान मिलकपुर ग्राम।

सुन मोहन का सुन्न धाम॥

यहाँ पर जन आ करे बसेरा।

हर दम मारे मोहन फेरा॥

हिंदीपथ.कॉम – HindiPath.com

ज्योति में ज्योति मिलाओ मन की।

निस दिन सेवा कर मोहन की॥

जो कोई करत मन से सेवा।

मोहन पार लगावे खेवा॥

सेवा यही हृदय में धर लो।

सबको छोड़ बाप एक कर लो॥

मन को करो न डामा डोल।

दुनिया समझो पोलम पोल॥

हिंदीपथ.कॉम – HindiPath.com

अब सुनो सुनाओ मोहन गाथा।

नर और नारी रगड़ें माथा॥

पागल भी आ रज में लेटे।

बांझ नार को दे रहे बेटे॥

ऐसे मोहन भोले भाले।

दुःखियों के दुःख हरने वाले॥

कोढ़िन को वो देते काया।

निर्धन को भर देते माया॥

हिंदीपथ.कॉम – HindiPath.com

अंतरयामी मोहन राम।

अड़े समारे सबके काम॥

भूत प्रेत निकट नहीं आवें।

मोहन नाम सुनत भग जावें॥

घी की ज्योति जले दिन बांकी।

मंदिर में मोहन के झांकी॥

सीता फल की गहरी छाया।

सोरन कर दई कोढ़िन काया॥

हिंदीपथ.कॉम – HindiPath.com

और सुनो मोहन करतूत।

साठ साल की ले रही पूत॥

नर नारी आ खाबे खींचर।

चुग रहे चुग्गा मोर कबूतर॥

परबत ऊपर बड़ लहरावे।

दरश करत जन अति सुख पावे॥

प्रेम भक्ति से जो तुम्हें ध्यावे।

दुःख दारिद्र निकट नहीं आवे॥

हिंदीपथ.कॉम – HindiPath.com

मैं मनमोहन दीन घनेरो।

तुम बिन कौन हरे दुःख मेरो॥

काम क्रोध मद लोभ न सतावे।

रिपु मन मोह अति भरमावै॥

करुऊ कृपा मम खोली वाला।

दास जान मोह करो निहाला॥

जब तक जीऊँ दरश तेरो पाऊँ।

निस दिन ध्यान चरन रज खाऊँ॥

हिंदीपथ.कॉम – HindiPath.com

कलयुग मैं तेरी कला सवाई।

कथी न जाय तेरी प्रभुताई॥

तेरी अजब निराली भान।

सत बुद्धि दो मोहन आन॥

हरदम सेवा करूँ तुम्हारी।

धूप दीप नैवेद्य पान सुपारी॥

रोम रोम में मोहन राम।

स्वास स्वास में तुम्हारा नाम॥

हिंदीपथ.कॉम – HindiPath.com

मैं अति दीन गरीब दुखहारी।

हरो कलेश भय भंजन भारी॥

नित्य प्रति पांच पाठ कर भाई।

लोक लाज करि सब देओ भुलाई॥

मोहन चालीसा पढ़े पढ़ावे।

अंत समय मोक्ष पद पावे॥

पीछे ना कोई रहे कलेश।

सीधा पहुँचे मोहन देश॥

हिंदीपथ.कॉम – HindiPath.com

अब भी मूरख कर कुछ चेत।

अपने उर में मोहन देख॥

विनती यही मेरी अरदास।

मुझे बना लो अपना दास॥

निस दिन तेरी सेवा चाहूँ।

जनम जनम ना नाम भुलाऊँ॥

तेरी भक्ति करो हमेश।

मेरी तुम से यही सन्देश॥

हिंदीपथ.कॉम – HindiPath.com

मेरी बोझिल जर जर नईया।

तुम बिन मोहन कौन खिवैया॥

राधे याम ना चाहे मान।

तेरे चरनों में निकले प्रान॥

॥दोहा॥

ज्योति जले उर भियसती ठंडे बढ़ की छाय।

मोहन राम मुंशी रटत हरदम घट से माय॥

॥ इति श्री बाबा मोहन राम चालीसा ॥

हिंदीपथ.कॉम – HindiPath.com

अन्य चालीसा पढ़े

- हनुमान चालीसा
- शिव चालीसा
- दुर्गा चालीसा
- शनि चालीसा
- गणेश चालीसा
- लक्ष्मी चालीसा
- राम चालीसा
- विष्णु चालीसा
- गायत्री चालीसा
- काली चालीसा
- भैरव चालीसा
- सरस्वती चालीसा
- कृष्ण चालीसा
- सूर्य चालीसा
- महावीर चालीसा
- साईं चालीसा
- महाकाली चालीसा
- तुलसी चालीसा
- बगलामुखी चालीसा
- गोरख चालीसा
- गोपाल चालीसा
- नवग्रह चालीसा
- रविदास चालीसा
- बाला जी चालीसा
- महालक्ष्मी चालीसा
- पार्वती चालीसा

- खाटू श्याम चालीसा
- रामदेव चालीसा
- राधा चालीसा
- विश्वकर्मा चालीसा
- पितर चालीसा
- बटुक भैरव चालीसा
- जाहरवीर चालीसा
- गिरिराज चालीसा
- नर्मदा चालीसा
- प्रेतराज चालीसा
- संतोषी चालीसा
- गंगा चालीसा
- शारदा चालीसा
- ललिता चालीसा
- अन्नपूर्णा चालीसा
- श्री वैष्णो चालीसा
- परशुराम चालीसा
- विन्ध्येश्वरी चालीसा
- ब्रह्मा चालीसा
- शाकम्भरी चालीसा
- राणी सती चालीसा
- गंगाराम चालीसा
- बालक नाथ चालीसा
- मोहन राम चालीसा
- शीतला चालीसा